Chandika Sahasrakshar Mala Mantra

चण्डिका सहस्राक्षर माला मंत्र

सर्वबाधामुक्ति मंत्र

Shri Raj verma ji

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

चण्डिका सहस्राक्षर मंत्र अत्यन्त उग्र एवं प्रभावशाली है। इसका तंत्रोक्त पाठ करने से महाभय, अकाल-मृत्यु, आर्थिक-हानि, अभिचारिक-क्रिया तथा असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है। समस्त शत्रु व ग्रहों की कुदृष्टि से जापक की रक्षा होती है। कार्य सिद्धि हेतु कम से कम 108 पाठ नित्य एक माह तक करने चाहिये। विशेष संकट में 11000 पाठ विधिपूर्वक सम्पन्न करें। समस्त यम नियमों की जानकारी गुरुमुख से प्राप्त करनी चाहिये।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री सर्वविज्ञान महाराज्ञी सप्तशती रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्रीमद्‌द्या भगवती सिद्धिचण्डिका सहस्राक्षरी महाविद्या मंत्रस्य श्रीमार्कण्डेय सुमेधा ऋषिः, गायत्र्यादि नानाविधानि छंदान्सि, नवकोटि शक्तियुक्ता श्रीमद्‌द्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता, श्रीमद्‌द्या भगवती सिद्धिचण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- श्रीमार्कण्डेय सुमेधा ऋषिभ्यां नमः शिरसि। गायत्र्यादि नानाविधानि छंदोभ्यो नमः मुखे। नवकोटि शक्तियुक्ता श्रीमद्‌ाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवतायै नमः हृदि। श्रीमद्‌ाद्या भगवती सिद्धिचण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

महाविद्यान्यास :- ॐ श्रीं नमः सहस्त्रारे। ॐ हैं नमः भाले। ॐ क्लीं नमः नेत्रयुगले। ॐ ऐं नमः कर्णद्वये। ॐ सौं नमः नासापुटद्वये। ॐ ॐ नमो मुखे। ॐ ह्रीं ॐ नमो कण्ठे। ॐ श्रीं नमो हृदये। ॐ ऐं नमः हस्तयुगे। ॐ क्लीं नमः उदरे। ॐ सौं नमः कट्यां। ॐ ऐं नमो गुह्ये। ॐ क्लीं नमो जंघायुगे। ॐ ह्रीं नमो जानुद्वये। ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे।

ध्यानम् :- ॐ या माता मधुकैटभप्रमथनी या माहिषोन्मूलनी, या धूम्रेक्षणचण्डमुण्ड दलनी या रक्तबीजाशनी। शक्तिः शुम्भनिशुम्भ दैत्यमथनी या सिद्धि लक्ष्मीः परा, सा देवी नवकोटि मूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।

मालामंत्र :- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्यौं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं जय जय महालक्ष्मि जगदाद्ये बीजसुरासुर

त्रिभुवन निदाने दयांकुरे सर्वतेजो रूपिणी महामहामहिमे महामहारूपिणी महामहामाये महामायास्वरूपिणी विरंचि संस्तुते! विधिवरदे सच्चिदानन्दे विष्णुदेहव्रते महामोहिनी मधुकैटभ जिह्वासिनि नित्यवरदान तत्परे! महास्वाध्याय वासिनी महामहातेज्यधारिणी! सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्तयरूपे! इन्द्रादि निखिल निर्जर सेविते! सामगानं गायन्ति पूर्णादय कारिणी! विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि रक्तांशुके सूर्यकोटि शशांककेन्द्रकोटि सुशीतले अग्निकोटि दहनशीले यमकोटिक्रूरे वहन सुशीतले! ॐ कार नाद बिन्दुरूपिणी निगमागम मार्गदायिनी महिषासुर निर्दलनि धूम्रलोचन वध परायणे चण्डमुण्डादि सिरच्छेदिनि रक्तबीजादि रुधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये महायोगिनी भूतवैताल भैरवादि तुष्टिविधायनि शुम्भनिशुम्भ शिरच्छेदिनि! निखिलासुर बलखादिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणी दिव्यदेहनिर्गुण सगुणे सदसत्रूपधारिणि सुरवरदे भक्तत्राण तत्परे! वरवरदे सहस्राक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटि चामुण्डारूपिणी नवकोटिकात्यायनीरूपे अनेकलक्षालक्ष स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि ईशानि भ्रामरि भीमे नारसिंहे! त्रयत्रिंशत् कोटिदैवते अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिके चतुरशीति मुनिजन संस्तुते! सप्तकोटि मंत्रस्वरूपे महाकाले रात्रि प्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दश भुवन भावा विकारिणि गरुड गामिनि! कों कार हों कार ह्रीं कार श्रीं

कार दलें कार जूँ कार सौं कार ऐं कार क्लें कार ह्रीं कार ह्रौं कार हौं कार नानाबीज कूट निर्मित शरीरे नाना बज मंत्रराग विराजिते! स्कल सुन्दरीगण सेवते करुणारस कल्लोलिनि कल्प वृक्षाधिष्ठिते चिन्तामणि द्वीपेऽवस्थिते मणिमन्दिर निवासे! चापिनी खड्गिनि चक्रिणि गदिनि शंखिनि पद्मिनि निखिल भैरवाधिपति समस्त योगिनी परिवृते! कालि कंकालि तोर तोतले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि! त्रिपुरे लोक जननि विष्णुवक्षस्थला लंकारिणि! अजिते अमिते अमराधिपे अनूप सरिते गर्भवासादि दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेमाधिषयनि शिवे शान्ति कुमारि देवि! सूक्तदश शताक्षरे चण्डि चामुण्डे महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयी विग्रहे! प्रसीद प्रसीद सर्व मनोरथान् पूरय-पूरय, सर्वारिष्ट विघ्नं छेदय-छेदय, सर्वग्रह पीडा ज्वरोग्र भयं विध्वंसय-विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय-वशय, मोक्षमार्गं दर्शय-दर्शय, ज्ञानमार्गं प्रकाशय-प्रकाशय, अज्ञानतमो नाशय-नाशय, धनधान्यादि कुरु-कुरु, सर्वकल्याणि कल्पय-कल्पय, मां रक्ष-रक्ष सर्वापद्भ्यो निस्तारय-निस्तारय। मम वज्रं शरीरं साधय-साधय, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमोदेव्यै महादेव्यै, शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्मताम्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्यथे त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तुते।

फलश्रुति :- सिद्धि चण्डी महामंत्रं यः पठेत् प्रयतो नरः। सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।। संग्रामेषु जयेत् शत्रून् मातंगं इव केसरी। वशयेत् सदा निखिलान् विशिषेण महीपतीन्।। त्रिकालं यः पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यपुरः सरम्। तस्य नश्यन्ति विघ्नानि ग्रहपीडाश्च वारणाम्। पराभिचार शमनं तीव्र द्रारिद्र्यनाशनं। सर्वकल्याण निलयं देव्याः सन्तोष कारकम्।। सहस्रावृत्तितस्तु देवि! मनोरथ समृद्धिदम्। द्विसहस्रावृत्तितस्तु सर्वसंकटनाशनम्।। त्रिसहस्रावृत्तितस्तु वशयेद् राजयोषितम्।। अयुतं प्रपठेद् यस्तु सर्वत्र चैवातन्द्रितः। पश्येच्चण्डिकां साक्षात् वरदान कृतोद्यमाम्।। इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः। वाच्यं न कस्यचित् देवि! विधानमस्थ सुन्दरि।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

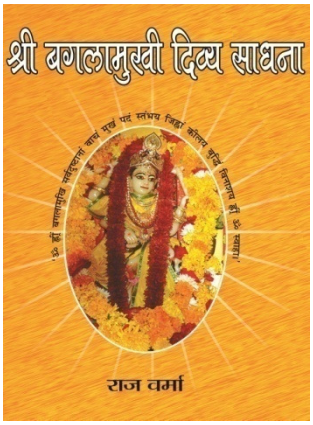

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413